रविवार 2 अगस्त, 2026

विषय — प्रेम

स्वर्ण पाठ: यूहन्ना 15 : 12

"मेरी आज्ञा यह है, कि जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।" — *मसीह यीशु*

उत्तरदायी अध्ययन: रोमियो 13 : 1, 2, 5, 8-10

1 हर एक व्यक्ति प्रधान अधिकारियों के आधीन रहे; क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं, जो परमेश्वर की
ओर स न हो; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं।
2 इस से जो कोई अधिकार का विरोध करता है, वह परमेश्वर की विधि का साम्हना करता है, और
साम्हना करने वाले दण्ड पाएंगे।
5 इसलिये आधीन रहना न केवल उस क्रोध से परन्तु डर से अवश्य है, वरन विवेक भी यही गवाही देता
है।
8 आपस के प्रेम से छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो; क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है,
उसी ने व्यवस्था पूरी की है।
9 क्योंकि यह कि व्यभिचार न करना, हत्या न करना; चोरी न करना; लालच न करना; और इन को छोड़ और
कोई भी आज्ञा हो तो सब का सारांश इस बात में पाया जाता है, कि अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।
10 प्रेम पड़ोसी की कुछ बुराई नहीं करता, इसलिये प्रेम रखना व्यवस्था को पूरा करना है॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. मत्ती 14 : 14-21

14 उस ने निकलकर बड़ी भीड़ देखी; और उन पर तरस खाया; और उस ने उन के बीमारों को चंगा किया।
15 जब सांझ हुई, तो उसके चेलों ने उसके पास आकर कहा; यह तो सुनसान जगह है और देर हो रही है, लोगों
को विदा किया जाए कि वे बस्तियों में जाकर अपने लिये भोजन मोल लें।
16 यीशु ने उन से कहा उन का जाना आवश्यक नहीं! तुम ही इन्हें खाने को दो।
17 उन्होंने उस से कहा; यहां हमारे पास पांच रोटी और दो मछिलयों को छोड़ और कुछ नहीं है।
18 उस ने कहा, उन को यहां मेरे पास ले आओ।
19 तब उस ने लोगों को घास पर बैठने को कहा, और उन पांच रोटियों और दो मछिलयों को लिया; और स्वर्ग
की ओर देखकर धन्यवाद किया और रोटियां तोड़ तोड़कर चेलों को दीं, और चेलों ने लोगों को।
20 और सब खाकर तृप्त हो गए, और उन्होंने बचे हुए टुकड़ों से भरी हुई बारह टोकिरयां उठाईं।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

21 और खाने वाले स्त्रियों और बालकों को छोड़कर पांच हजार पुरूषों के अटकल थे॥

2. लूका 6 : 9 (*से 1st* ,), 27 (प्रेम)-36

9 तब यीशु ने उनसे कहा,
27 अपने शत्रुओं से प्रेम रखो; जो तुम से बैर करें, उन का भला करो।
28 जो तुम्हें स्राप दें, उन को आशीष दो: जो तुम्हारा अपमान करें, उन के लिये प्रार्थना करो।
29 जो तेरे एक गाल पर थप्पड़ मारे उस की ओर दूसरा भी फेर दे; और जो तेरी दोहर छीन ले, उस को कुरता लेने से भी न रोक।
30 जो कोई तुझ से मांगे, उसे दे; और जो तेरी वस्तु छीन ले, उस से न मांग।
31 और जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें, तुम भी उन के साथ वैसा ही करो।
32 यदि तुम अपने प्रेम रखने वालों के साथ प्रेम रखो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि पापी भी अपने प्रेम रखने वालों के साथ प्रेम रखते हैं।
33 और यदि तुम अपने भलाई करने वालों ही के साथ भलाई करते हो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि पापी भी ऐसा ही करते हैं।
34 और यदि तुम उसे उधार दो, जिन से फिर पाने की आशा रखते हो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि पापी पापियों को उधार देते हैं, कि उतना ही फिर पाएं।
35 वरन अपने शत्रुओं से प्रेम रखो, और भलाई करो: और फिर पाने की आस न रखकर उधार दो; और तुम्हारे लिये बड़ा फल होगा; और तुम परमप्रधान के सन्तान ठहरोगे, क्योंकि वह उन पर जो धन्यवाद नहीं करते और बुरों पर भी कृपालु है।
36 जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है, वैसे ही तुम भी दयावन्त बनो।

3. 1 यूहन्ना 4 : 7-21

7 हे प्रियों, हम तुम में प्रेम रखो; क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है: और जो कोई प्रेम नहीं करता, वह भगवान से जन्मा है; और भगवान को पता है।
8 जो प्रेम नहीं रखता, वह भगवान को नहीं जानता, क्योंकि भगवान प्रेम है।
9 जो प्रेम भगवान हम से रखता है, वह इस से प्रकट हुआ, कि भगवान ने अपने एकलौते पुत्र को अवतार में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं।
10 प्रेम इस में नहीं कि हमने भगवान को प्रेम किया है; पर इस में है, कि उसने हम से प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिए अपने पुत्र को भेजा।
11 हे प्रियो, जब भगवान ने हम से ऐसा प्रेम किया, तो हम को भी आपस में प्रेम रखना चाहिए।
12 भगवान को कभी किसी ने नहीं देखा; यदि हम आपस में प्रेम रखते हैं, तो परमेश्वर हम में बना रहता है; और उसका प्रेम हम में अनुक्रम हो गया है।
13 इसी से हम जानते हैं, कि हम उस में बने रहते हैं, और वह हम में; क्योंकि उस ने अपने आत्मा में से हमें दिया है।
14 और हम ने देख भी लिया और गवाही देते हैं, कि पिता ने पुत्र को जगत का उद्धारकर्ता करके भेजा है।
15 जो कोई यह मान लेता है, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है: परमेश्वर उस में बना रहता है, और वह परमेश्वर में।

16 और जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, उस को हम जान गए, और हमें उस की प्रतीति है; परमेश्वर प्रेम है: जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है; और परमेश्वर उस में बना रहता है।
17 इसी से प्रेम हम में सिद्ध हुआ, कि हमें न्याय के दिन हियाव हो; क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही संसार में हम भी हैं।
18 प्रेम में भय नहीं होता, वरन सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है।
19 हम इसलिये प्रेम करते हैं, कि पहिले उस ने हम से प्रेम किया।
20 यदि कोई कहे, कि मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूं; और अपने भाई से बैर रखे; तो वह झूठा है: क्योंकि जो अपने भाई से, जिस उस ने देखा है, प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर से भी जिसे उस ने नहीं देखा, प्रेम नहीं रख सकता।
21 और उस से हमें यह आज्ञा मिली है, कि जो कोई अपने परमेश्वर से प्रेम रखता है, वह अपने भाई से भी प्रेम रखे॥

4. 1 कुरिन्थियों 13 : 1-13

1 यदि मैं मनुष्यों, और सवर्गदूतों की बोलियां बोलूं, और प्रेम न रखूं, तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल, और झंझनाती हुई झांझ हूं।
2 और यदि मैं भविष्यद्वाणी कर सकूं, और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूं, और मुझे यहां तक पूरा विश्वास हो, कि मैं पहाड़ों को हटा दूं, परन्तु प्रेम न रखूं, तो मैं कुछ भी नहीं।
3 और यदि मैं अपनी सम्पूर्ण संपत्ति कंगालों को खिला दूं, या अपनी देह जलाने के लिये दे दूं, और प्रेम न रखूं, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं।
4 प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं।
5 वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता।
6 कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है।
7 वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है।
8 प्रेम कभी टलता नहीं; भविष्यद्वाणियां हों, तो समाप्त हो जाएंगी, भाषाएं हो तो जाती रहेंगी; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा।
9 क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है, और हमारी भविष्यद्वाणी अधूरी।
10 परन्तु जब सवर्सिद्ध आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा।
11 जब मैं बालक था, तो मैं बालकों की नाईं बोलता था, बालकों का सा मन था बालकों की सी समझ थी; परन्तु सियाना हो गया, तो बालकों की बातें छोड़ दी।
12 अब हमें दर्पण में धुंधला सा दिखाई देता है; परन्तु उस समय आमने साम्हने देखेंगे, इस समय मेरा ज्ञान अधूरा है; परन्तु उस समय ऐसी पूरी रीति से पहिचानूंगा, जैसा मैं पहिचाना गया हूं।
13 पर अब विश्वास, आशा, प्रेम थे तीनों स्थाई है, पर इन में सब से बड़ा प्रेम है।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. **113 : 5-6**

ईसाई विज्ञान का महत्वपूर्ण हिस्सा, हृदय और आत्मा, प्रेम है।

2. **510 : 18-19**

केवल प्रेम ही अनंत मन का असीम विचार प्रदान कर सकता है।

3. **9 : 5-21 (*से 2nd* .)**

इन सवालों के जवाब में सभी प्रार्थनाओं का परीक्षण निहित है: क्या हम इस आज्ञा के कारण अपने पड़ोसी से बेहतर प्रेम करते हैं? क्या हम पुराने स्वार्थ का पीछा करते हैं, किसी चीज़ के लिए बेहतर प्रार्थना करने से संतुष्ट हैं, हालाँकि हम अपनी प्रार्थना के साथ लगातार रहकर अपने अनुरोधों की ईमानदारी का कोई सबूत नहीं देते हैं? अगर स्वार्थ ने दया को जगह दी है, तो हम अपने पड़ोसी को निस्वार्थ रूप से सम्मान देंगे, और उन्हें आशीर्वाद देंगे कि हमें अभिशाप दें; लेकिन हम इस महान कर्तव्य को कभी नहीं पूछेंगे कि यह किया जाए। इससे पहले कि हम अपनी आशा और विश्वास के फल का आनंद ले सकें, हमें एक क्रास उठाना होगा।

क्या आप "अपने भगवान को अपने प्रभु और अपने सभी प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखते हैं"? इस आदेश में बहुत कुछ शामिल है, यहां तक कि सभी भौतिक संवेदना, स्नेह और पूजा का समर्पण भी। यह ईसाई धर्म का एल डोराडो है।

4. **469 : 30-5**

एक पिता, यहां तक कि भगवान के साथ, मनुष्य का पूरा परिवार भाइयों होगा; और एक मन और उस ईश्वर, या भलाई के साथ, मनुष्य का भाईचारा प्रेम और सत्य से मिलकर बना होगा, और इसमें सिद्धांत और आध्यात्मिक शक्ति की एकता होगी जो दिव्य विज्ञान का गठन करती है।

5. **494 : 30-32**

हमारे मास्टर ने शैतानों (बुराइयों) को बाहर निकाल दिया और बीमारों को चंगा किया। उनके अनुयायियों के बारे में यह भी कहा जाना चाहिए, कि वे भय और सभी बुराईयों को अपने और दूसरों से दूर करते हैं और बीमारों को ठीक करते हैं।

6. **518 : 13-23**

ईश्वर स्वयं का विचार देता है, अधिक के लिए कम करने के लिए, और बदले में, उच्च हमेशा कम की रक्षा करता है। सभी को एक ही सिद्धांत, या पिता, को एक भव्य भाईचारे में रखते हुए, आत्मा में समृद्ध गरीबों की मदद करते हैं। और धन्य है वह आदमी जो दूसरे की भलाई में अपनी भलाई जानता है, अपने भाई की आवश्यकता को देखता है और उसकी आपूर्ति करता है। प्रेम कमजोर आध्यात्मिक को, अमरता, और अच्छाई देता है, जो सभी के माध्यम से चमकता है जैसे कि कली के माध्यम से खिलता है। ईश्वर की सभी विविध अभिव्यक्तियाँ स्वास्थ्य, पवित्रता, अमरता - अनंत जीवन, सत्य और प्रेम को दर्शाती हैं।

7. **495 : 25-19**

सवाल। — मैं क्रिश्चियन साइंस की समझ में सबसे तेजी से कैसे प्रगति कर सकता हूं?

उत्तर। — पत्र का अच्छी तरह से अध्ययन करें और आत्मा को आत्मसात करें। क्रिश्चियन साइंस के दिव्य सिद्धांत का पालन करें और ज्ञान, सत्य और प्रेम में निरंतरता का पालन करते हुए, ईश्वर के आकर्षण का पालन करें।मन के विज्ञान में, आप जल्द ही यह जान जाएँगे कि गलती गलती को खत्म नहीं कर सकती। आप यह भी सीखेंगे कि विज्ञान में एक इंसान से दूसरे इंसान में बुरे सुझाव ट्रांसफर नहीं होते, क्योंकि केवल एक ही मन है, और यह सदैव मौजूद सर्वशक्तिमान मन मनुष्य द्वारा प्रतिबिंबित होता है और पूरे ब्रह्मांड को नियंत्रित करता है। आप सीखेंगे कि क्रिश्चियन साइंस में पहला कर्तव्य ईश्वर का पालन करना, एक मन रखना और दूसरे को अपने जैसा प्यार करना है।

हम सभी को यह सीखना चाहिए कि जीवन ईश्वर है। अपने आप से पूछें: क्या मैं उस जीवन को जी रहा हूं जो सर्वोच्च भलाई के लिए है? क्या मैं सत्य और प्रेम की उपचार शक्ति का प्रदर्शन कर रहा हूँ? यदि ऐसा है, तो रास्ता उज्जवल हो जाएगा "पूरे दिन तक।" आपका फल यह साबित करेगा कि परमेश्वर की समझ मनुष्य को क्या लाती है। शाश्वत रूप से इस विचार पर दृढ़ रहें, - कि यह आध्यात्मिक विचार है, पवित्र आत्मा और मसीह, जो आपको वैज्ञानिक निश्चितता के साथ, अपने ईश्वरीय सिद्धांत, प्रेम, अंतर्निहित, अतिव्यापी, और सभी को शामिल करने के आधार पर प्रदर्शित करने में सक्षम बनाता है।

8. 4 : 3-5

हमें सबसे अधिक जरूरत है, अनुग्रह में वृद्धि, धैर्य, नम्रता, प्रेम, और अच्छे कार्यों में व्यक्त की गई इच्छा की प्रार्थना।

9. 572 : 3-18

इस तरह हम उत्पत्ति और प्रकाशित वाक्य मे, बाइबल की पहली और आखिरी दोनों पुस्तकों में देखते हैं—कि पाप को ईसाई और वैज्ञानिक तरीके से उसके असली रूप में कम किया जाना चाहिए। "आपस में प्रेम रखें" (1 यूहन्ना 3: 23), यह प्रेरित लेखक की सबसे सरल और गहरी सलाह है। साइंस में हम भगवान के बच्चे हैं; लेकिन जो कुछ भी सामग्री भावना या नश्वर है, वह उनके बच्चों का नहीं है, क्योंकि भौतिकता आध्यात्मिकता का उल्टा रूप है।

प्रेम क्रिश्चियन साइंस के कानून को पूरा करता है, और इस दिव्य सिद्धांत की कुछ भी कमी, समझा और प्रदर्शित नहीं किया जा सकता है, कभी भी सर्वनाश की दृष्टि प्रस्तुत कर सकता है, सत्य के साथ त्रुटि के सात मुहरों को खोल सकता है, या पाप, बीमारी और मृत्यु के असंख्य भ्रमों को उजागर कर सकता है। आत्मा के प्रभुत्व में, यह देखा और माना जाएगा कि पदार्थ गायब हो जाना चाहिए।

10. 454 : 14-24

जो व्यक्ति मन-चिकित्सा के सिद्धांत को अच्छी तरह समझता है, वह अपने छात्र को गलती के साथ-साथ सच्चाई, गलत के साथ-साथ सही अभ्यास भी बताता है। ईश्वर और मनुष्य के लिए प्यार हीलिंग और शिक्षण दोनों में सच्चा प्रोत्साहन है। प्रेम प्रेरणा देता है, रोशनी करता है, नामित करता है और मार्ग प्रशस्त करता है। सही इरादों ने विचार, और ताकत और बोलने और कार्रवाई करने की स्वतंत्रता को चुटकी दी। सत्य की वेदी पर प्रेम पुरोहिती है। दिव्य प्रेम के लिए धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करें नश्वर मन के पानी पर आगे बढ़ने के लिए, और सही अवधारणा बनाएं। धीरज "को अपना पूरा काम करने दो॥"

11. 340 : 20-29

प्रथम आज्ञा का दिव्य सिद्धांत, विज्ञान के आधार को बताता है, जिसके द्वारा मनुष्य स्वास्थ्य, पवित्रता और जीवन को शाश्वत प्रदर्शित करता है। एक अनंत भगवान, अच्छा, पुरुषों और देशों को एकजुट करता है; मनुष्य के भाईचारे का गठन करता है; युद्ध समाप्त करता है; पवित्रशास्त्र पूरा करता है कि, "अपने पड़ोसी से अपने जैसा प्रेम करो;" बुतपरस्ती और ईसाई मूर्तिपूजा का सत्यानाश करता है, — सामाजिक, नागरिक, आपराधिक, राजनीतिक और धार्मिक क्षेत्रों में जो कुछ भी गलत है; लिंगों को बराबर करता है; मनुष्य पर शाप की घोषणा करता है, और कुछ भी नहीं छोड़ता है जो पाप कर सकता है, पीड़ित हो सकता है, दंडित हो सकता है या नष्ट हो सकता है।

12. 503 : 12-15

ईश्वरीय विज्ञान, ईश्वर का शब्द, त्रुटि पर अंधेरे के लिए कहता है, "ईश्वर सब में है," और हमेशा मौजूद प्रेम का प्रकाश ब्रह्मांड को प्रकाशित करता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6